५४: परिवार समूह सभा

दिनांक -२३-०१-२०१२

प्रत्येक परिवारों में से एक-एक व्यक्ति को पूरा परिवार के १० लोग पहचान पाना ही प्रधान बात है | ऐसे पहचानने के आधार पर निर्वाचन होना स्वाभाविक है | हर व्यक्ति का पहचान १० व्यक्तियों में होना स्वाभाविक है, सहज है | ऐसा अनुभव कर देखा गया है | १० परिवार में से १-१ व्यक्ति का निर्वाचन होना एक सहज बात है | ऐसे १० व्यक्ति एक परिवार समूह सभा को गठित करेंगे | परिवार समूह सभा में परिवारों से अधिकृत अधिकारी के रूप में निर्वाचित लोग विकल्पात्मक शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय कार्य और स्वास्थ्य-संयम कार्यक्रम को सूत्र रूप में १० परिवारों में क्रियान्वित करेंगे | यही परिवार समूह सभा का कार्य है | निर्वाचित १० सदस्य १० परिवार में से किसी परिवार का जाँच कर सकता है, यह अधिकार है | इस प्रकार १० परिवारों में उक्त पांचो प्रकार की विभूतियाँ प्रमाणित होने लगती हैं | तब स्वाभाविक रूप में वर्तमान में विश्वास होने लगता है |

वर्तमान का मतलब कहे गये पांच विभूतियों से है | विभूतियों का मतलब वर्तमान में प्रमाणित होना है | यही विश्वास का आधार है | १० परिवारों में विश्वास होने के बाद यह विशालता की ओर दौड़ता ही है | इस प्रक्रियापूर्वक अर्थात १० निर्वाचित सदस्यों में से १-१ व्यक्ति को निर्वाचित करना सहज है | ऐसा १० परिवार समूह सभा से १० व्यक्ति निर्वाचित करने का अधिकार बनता है | पुनः मूल परिवार में जैसा पांच विभूतियाँ सूत्रपात हुई, उसी का विस्तार होने के कार्यक्रम रूप में परिवार समूह सभाएं कार्य करेंगी | इन १०-१० परिवारों में विनिमय कार्य सम्पन्न होना भी महत्त्वपूर्ण है | विनिमय कार्य में कम से कम दो व्यक्ति होते ही हैं | एक से कुछ लेना होता है, एक को कुछ देना होता है | दोनों पक्ष मूल्यांकन करेंगे अपने अपने वस्तुओं का, साथ में सामने वाले भी मूल्यांकन करेंगे सामने वाली वस्तुओं का | यह मूल्यांकन क्रिया है | यह समझदार व्यक्ति के लिये सुगम है | समझदारी विकल्प रूप में है | आज परम्पराएँ इसके पक्ष में नहीं हैं |

परम्परा जीव चेतना को मानकर चला है | जीव चेतना का अंतिम बिंदु सुविधा, संग्रह ही है | मानव ज्ञानावस्था में है | ज्ञानावस्था का मतलब समझदार होना ही है | जबकि परम्परा जीव चेतना में विवश है | सम्पूर्ण मानव जीव चेतना में जीते हुए भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त हो नहीं सकता | हर मानव अपराध एवं भ्रम से मुक्त होना ही चाहता है | इसी क्रम में हर परिवार में अपराध एवं भ्रम-मुक्त होने की विधि का निश्चयन होता ही है | | यही मानव संस्कृति, सभ्यता का धारकता, वाहकता का आधार है | मानव संस्कृति, मानव चेतना का प्रमाण है | यह विकसित चेतना विधि से ही सफल है | विकसित चेतना स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार रूप में जीने से, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीने से; समाधान, समृद्धि अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीने से ही है | ऐसा जीना विकसित चेतना के ज्ञान से ही संभव है |

यही ज्ञान, विज्ञान, विवेक के रूप में पहचानना होता है | स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार रूप में जीने के सूत्र, व्याख्या के रूप में विज्ञान को पहचाना जाता है | इस विधि से व्यवहार विज्ञान प्रयोजित होता है | यह स्वयं बौधिक विज्ञान अर्थात मनोविज्ञान पर आधारित ही है | न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना, नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक जीना ही विवेकपूर्वक जीना है | समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीना ही ज्ञानपूर्वक जीना है अथवा ज्ञानपूर्वक जीने का प्रमाण है | ज्ञान विकसित चेतना ही है | यह अध्यात्म विज्ञान सहज अध्ययन विधि पूर्वक ही सफल हो पाता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

-ए. नागराज